ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 214-215
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

# महिला सशक्तिकरण एवं ग्रामीण विकास

हरकेश मीणा

सह आचार्य– राजनीति विज्ञान, श्रीमती नर्बदा देवी बिहानी राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, नोहर–हनुमानगढ़ (राजस्थान) भारत

Received-26.11.2022, Revised-03.12.2022, Accepted-08.12.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

***सारांशः*** ***किसी व्यक्ति की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक शक्ति में सुधार को सशक्तिकरण कहा जाता है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है कि महिलाऐं इसमें शक्तिशाली बनती है। जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले ले सकती है तथा समाज में अच्छें से जीवन यापन करती है। महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य उनमें आत्मविश्वास का सचार करना और उनकी प्रगति करना है। महिला सशक्तिकरण देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। प्राचीन भारतीय समाज के महिलाओ की स्थिति काफी सम्मानजनक थी। स्त्री, पुरूष को जीवन रूपी गाड़ी के दो पहियें समझे जाते थे तथा दोनो को समान अधिकार प्राप्त था। मनु स्मृति काल में महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया तथा धीरे–धीरे उनके अधिकार पुरूषों से कम होने लगे तथा स्त्रियों की स्थिति बडी दयनीय हो गई लेकिन भारत में ब्रिटिश काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार होने लगा। इस काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कुछ समाज सुधारको ने अहम भूमिका निभाई। धीरे–धीरे स्त्री को घर से बाहर निकलने के अवसर प्राप्त होने लगे तथा सामाजिक विकास में महिला महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगी। उन्हें कार्य करने के अवसर प्राप्त होने लगे, शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ और नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी। अनेक सामाजिक समस्याओं के बावजुद नारी प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगी। पर्दा प्रथा कमजोर पडने लगी तथा ग्रामीण क्षेत्र में महिलाऐं महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगी।***

***कुंजीभूत शब्द– महिला सशक्तिकरण, आत्मविश्वास, प्राचीन भारतीय समाज, सम्मानजनक, समान अधिकार, नारी प्रगति।***

आज ग्रामीण क्षेत्र के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है और यदि हमें भारत का विकास करना है, तो ग्रामीण क्षेत्र का विकास करना होगा, क्योंकि भारत की आत्मा गाँव में बसती है। यदि गाँवों का विकास करना है, तो महिलाओं का विकास करना होगा, क्योंकि सच्चे अर्थो में महिलाऐं ग्रामीण विकास की कुंजी है। भारत की अधिकांश जनता ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है और ग्रामीण क्षेत्र की अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित है, कृषि के बाद डेयरी उधोग, पशुपालन, मुर्गी पालन, मछली पालन आदि धन्धें ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पोषक होते है। इन सभी में महिलाऐं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में कृषि ओर उसके सहायक उधोगिक क्षेत्रों में लगभग 89.5 प्रतिशत शक्ति श्रम में महिलाओं की भूमिका है तथा डेयरी उधोग में रोजगार में लगे कुल व्यक्तियों का 94 प्रतिशत महिलाओं का है। इसके साथ महिलाएँ पशुपालन व मुर्गी पालन आदि में भी मुख्य भूमिका निभाती है।

ग्रामीण विकास में महिलाएँ जन प्रतिनिधि के रूप में अपना योगदान देती है। एक महिला सरपंच कन्या भ्रुण हत्या, बिगड़ता लिगानुपात आदि समस्याओं को महिलाओं के सामने प्रभावशाली ढंग से उठा सकती है तथा महिलाओं को कन्या बचाओं की प्रेरणा देती है। इसके साथ महिलाओं को अस्पताल में ही प्रसव करना, नियमित रूप से अपने स्वास्थ्य का परीक्षण करवाने हेतु प्रोत्साहित करती है तथा सरकारी योजनाओं के बारे में महिलाओं को जानकारी प्रदान करती है।

आंगनबाडी कायकर्ता के रूप में महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों के नियमित स्वास्थ्य का परीक्षण करती है उनके खानपान के बारे में माँ–बाप को जागरूक करती है तथा गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण तथा टीकाकरण जैसी प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण योगदान देती है जिससे महिलाओं का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आगनबाडी कायकर्ता के रूप में महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के स्वास्थ्य व पोषण के बारे में ध्यान रखती है तथा टीकाकरण में सहयोग करके पोलिया जैसी बीमारी से मुक्त दिलाने में योगदान देती है। एक महिला नर्स ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को स्वास्थ्य के बारें में पुरूष की बजाय अधिक अच्छी तरह बता सकती है तथा महिलाएँ भी अपनी बीमारीयों के बारें में महिला नर्स से खुलकर बात कर सकती है तथा अपने स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श नर्स से लेती है। इसके अतिरिक्त महिला नर्स पेयजल, साफ सफाई आदि के बारे में ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करती है।

ग्रामीण महिलाओं को परिवार नियोजन हेतु प्रेरित करने के साथ–साथ प्राथमिक उपचार में भी महिला नर्स सहयोग प्रदान करती है। 'आशा' सहयोगिनी भी ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। एक शिक्षक के रूप में महिला ग्रामीण विकास में अपना योगदान देती है। महिला शिक्षक ग्रामीण लडकियों को पढने हेतु प्रेरित करती है तथा सरकारी योजनाओं से ग्रामीण महिलाओं को अवगत कराती है। महिला शिक्षकों से प्रेरित होकर ग्रामीण लड़कीयों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित होती है। एक महिला शिक्षक महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत बढाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है, लेकिन आज भी महिलाओं

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

को अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है, पर्दा प्रथा कमोवेश आज भी विधमान है। महिलाओं का साक्षारता प्रतिशत कम है। इसके साथ ही मजदूरी में असमानता, असुरक्षा की भावना, पारिवारिक हिंसा, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, कार्य की अनिश्चितता आदि समस्याओं से महिलाओं का झुझना पडता है। इन समस्याओं का समाधान करके हम महिलाओं का ग्रामीण विकास में योगदान बढा सकते है। महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं को सक्रिय रूप से लागू करना होगा। ग्रामीण क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर करना होगा तथा महिलाओं को भी स्वास्थ्य कें प्रति जागरूक करना होगा। क्योंकि यदि उनका स्वास्थ्य सही होगा तो वो अच्छे ढग से कार्य कर सकेगी। मजदुरी में असमानता को वास्तविक रूप से समाप्त करना होगा। सामाजिक सुरक्षा के उपाय करने होगे। कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस प्रशासन को अधिक मुस्तैद रहना होगा। महिलाओं हेतु स्थाई रोजगार के प्रबन्ध करने होगे ताकि कार्य की अनिश्चितता समाप्त हो सके। शिक्षा के प्रसार के साथ –साथ तकनीकी ज्ञान का भी प्रसार करना होगा। डवाकरा को प्रभावशाली रूप से लागू करना होगा तथा राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना जैसी गतिविधियों को अधिक महिला केन्द्रीकृत करना होगा। महिला सशक्तीकरण को बढाना होगा। गाँव में काम काजी विधालयों का निर्माण करना होगा। इन विधालयों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को कुटीर उधोग धन्धों के बारे में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि महिलाऐं अच्छे ढग से कार्य कर सकें।

अपने अधिकारों के प्रति जागरूक एवं शिक्षित महिला ही आर्थिक रूप से स्वालम्बी बन सकती है। क्या करना है और क्या नही ? इसका फैसला ले सकती है। ग्रामीण महिलाऐं परिवार की आजीविका के साथ–साथ परिवार व समुदाय के समग्र सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये महिलाऐं गृह कार्य के साथ–साथ कृषि कार्य व अन्य कुटीर उधोग धन्धों में काम करती है। परिवार के लिए पानी और ईधन जैसी सुविधा जुटाने में भी महिलाऐं अहम भूमिका अदा करती है। लेकिन हमें उत्पादन के साधानों तक महिलाओं की पहुच को आसान बनाना होगा। ग्रामीण कृषि भूमि धारको में महिलाओं का प्रतिशत बढाना होगा। इसके साथ–साथ महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करना होगा। ग्रामीण स्कूल में महिलाओं का प्रतिशत बढाना होगा क्योंकि शिक्षा ही ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का मुख्य साधन है। शिक्षा के द्वारा ही महिलाऐं गरीबी से लड सकती है, यदि महिला शिक्षित और स्वस्थ है तो वह परिवार के लिए अधिक आय अर्जित कर सकती है तथा परिवार व समाज में निर्णय लेने में सक्षम हो सकती है। ग्रामीण महिलाऐं ऐसी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो श्रम मानको के बाहर सचांलित है। उनका अवैतनिक योगदान पारिवारिक जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण भारतीय महिलाएँ सामाजिक व आर्थिक क्षैत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन उनके योगदान को अनदेखा कर दिया जाता है। महिलाएँ परिवार की देखभाल के साथ–साथ खेतो में कृषि कार्य करती है। इसके अतिरिक्त महिलाएँ मातृ पोषण, पानी, ईंधन, साफ–सफाई तथा स्वास्थ्य सेवाओं में भी अपना योगदान भली प्रकार देती है। अतः ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यदि कुछ समस्याओं का समाधान कर दिया जाये, तो वास्तविक रूप से महिलाएँ ग्रामीण विकास की कुंजी है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रज्ञा शर्मा, महिलाएँ लैगिक असमानता एवं अपराध, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर।
2. सिंह, डॉ. अन्जु, ग्रामीण विकास योजनाओं के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक विकास, कला एवं धर्म शोध संस्थान प्रकाशन, वाराणसी।
3. योगेन्द्र शर्मा, महिला सशक्तिकरण दशा और दिशा, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद।
4. डॉ. डीसी पन्त, भारत में ग्रामीण विकास।

*****